कितनी प्रजातियां हैं दुनिया में?

आजकल जैव विविधता का बोलबाला है। इस संदर्भ में सवाल यह उठता है कि दुनिया में सजीवों की कितनी प्रजातियां हैं। ताज़ा अध्ययनों से पता चलता है कि दुनिया में जैव प्रजातियों की संख्या उतनी ज़्यादा नहीं है जितना कि पहले अनुमान लगाया गया था।

1982 में वॉशिंगटन के स्मिथसोनियन संस्थान के टेरी एर्विन ने अनुमान लगाया था कि दुनिया में कुल प्रजातियों की संख्या करीब 3 करोड़ है। यह अनुमान उन्होंने किस आधार पर लगाया था? इसके लिए उन्होंने पनामा की एक वृक्ष प्रजाति *ल्यूही सीमानी* पर पाए जाने वाले भृंगों यानी बीटल्स की संख्या गिनी थी, जो 163 निकली थी। इसमें उन्होंने दुनिया भर में पाई जाने वाली वृक्ष प्रजातियों की संख्या से गुणा किया था, यह मानकर कि किसी भी वृक्ष प्रजाति पर इतने बीटल्स पलते होंगे। फिर उन्होंने यह माना था कि दुनिया में पाए जाने वाले कुल संधिपाद जंतुओं (आर्थ्रोपोड्स) में से 40 प्रतिशत बीटल्स हैं। इस आधार पर उन्होंने कुल आर्थ्रोपोड्स की संख्या की गणना की और उसके आधार पर कुल जैव प्रजातियों की। आंकड़ा आया 3 करोड़।

अब ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न विश्वविद्यालय के एंड्रयू हैमिल्टन ने नए सिरे से गणना की है। हैमिल्टन ने अपनी गणनाएं एक वृक्ष प्रजाति के आधार पर नहीं बल्कि पपुआ न्यू गिनी की 56 वृक्ष प्रजातियों पर पाए गए 434 बीटल्स के आधार पर की है। इस अध्ययन के बल पर उनका कहना है कि संधिपाद जंतु प्रजातियों की संख्या 25 से 37 लाख के बीच है।

अब सवाल उठता है कि संधिपाद जंतु प्रजातियों की संख्या के आधार पर कुल प्रजातियों की संख्या कितनी होगी। यदि हम इसमें ज्ञात कशेरुकी जंतुओं (करीब 50,000), वनस्पतियों (करीब 4,00,000) और फफूंद व शैवाल जैसे अन्य जीवों (करीब 13 लाख) की संख्या जोड़ दें तो कुल 55 लाख का आंकड़ा मिलता है।

गौरतलब है कि न तो एर्विन ने और न ही हैमिल्टन ने बैक्टीरिया को शामिल किया है। कारण यह है कि बैक्टीरिया को प्रजातियों में विभक्त करना मुश्किल होता है।

अन्य वैज्ञानिकों के बीच अब इस मामले में एक बहस छिड़ गई है। जहां लगभग सभी वैज्ञानिक मानते हैं कि एर्विन का आंकड़ा तर्कसंगत नहीं था वहीं कई वैज्ञानिक यह भी मानते हैं कि हैमिल्टन का आंकड़ा जैव विविधता को कम करके आंक रहा है। अधिकांश वैज्ञानिकों का मत है कि वास्तविकता इन दो के बीच कहीं होगी। हमें एक ही भौगोलिक परिस्थिति में किए गए अध्ययनों के आधार पर वैश्विक अनुमान निकालने से बचना होगा और ज़्यादा व्यापक अध्ययन की ज़रूरत होगी। ***(स्रोत फीचर्स)***